

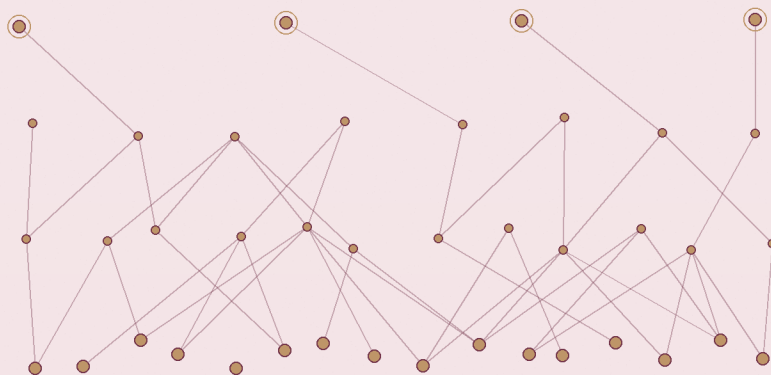
गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३९

वंशावली मानचित्रण

समाज आ विवाहजाल

Decoding the Panji of Mithila · Volume 5



सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

विदेह

ISSN 2229-547X

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड ३९

वंशावली मानचित्रण : समाज आ विवाहजाल

मूल ग्रन्थकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

आधारग्रन्थ : Decoding the Panji of Mithila, Volume V

विदेह • प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X

प्रकाशनाधिकार आ पाठस्रोत

मूल शोध-ग्रन्थ : गजेन्द्र ठाकुर। सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार।

मूल ग्रन्थक उपलब्ध अधिकार-विवरण अनुसार © गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर।

समीक्षाक आधार Decoding the Panji of Mithila क सम्बन्धित मूल ग्रन्थ अछि। पञ्जी-पोथीक प्राचीन तिरहुता छवि अथवा स्वतंत्र पाण्डुलिपिक प्रत्यक्ष प्रमाणपरीक्षण एहि संस्करणमे दावा नहि कएल गेल अछि।

जाल-पता : <https://www.videha.co.in/>

प्रतिरूप : <https://videha-ejournal.github.io/videha/>

अनुक्रमणिका

अध्याय १ — पञ्जीक सङ्केतभाषा आ विवाह-अनुमतिक अभिलेख.....	8
अध्याय २ — बल्लाल सेन, हलायुध आ विद्वानक प्रतिष्ठाक आरम्भिक आख्यान.....	9
अध्याय ३ — फूलसरा-हरौत-पोठिया सुलतानपुर : ग्रामजालक विस्तार.....	10
अध्याय ४ — शिव हरिअम्ब, सन्दहपुर-दिघोय आ दन्ती-चोपडा बखरीक वंशजाल.....	11
अध्याय ५ — महादेव दिघडी, बेहट-खण्डवला आ पद्मपुरक आधुनिक विस्तार.....	13
अध्याय ६ — डोम टेकारी ग्राम : विद्वान परम्परा आ कन्या-सम्बन्धक घनत्व.....	15
अध्याय ७ — घोडाघाट-रतिपाड़-बेलौच : विवाहक विस्तारित क्षेत्र.....	17
अध्याय ८ — रतनपुर-रभिडा-बनैली : राजशाखाक प्रतिष्ठा.....	18
अध्याय ९ — बड़गाम-दरिहरा-असूरा : कविक वंश आ पदवी.....	19
अध्याय १० — बलियास-ओगही-बनैली : बीजी पुरुषक स्थान.....	20
अध्याय ११ — पकलिया-महिषी-पूर्णिया : क्षेत्रीय जाल.....	21
अध्याय १२ — धर्मपुर दक्षिण रघुनाथपुर : कवित्वक पदवी आ क्षेत्र.....	22
अध्याय १३ — Katayi-Anhara Belepothia, Hemnagar: Hingu-Kamal, Matinath, Hira, Chiranjeev, Ugramani, Sundarmani, Devaraj Singh, and the Hemnagar-Khandwala Continuation.....	23
अध्याय १४ — Asura-Suptani Gangoli and Singholi Mandar Danti: Brijmohan, Anand Mohan, Kamal Mohan, Babuji, Jagu, Gangadhar, Harijiv, and the Asura-Andhasur Continuation.....	25
अध्याय १५ — Birwan Batheli: Mahamahopadhyay Batesh, Pashupati, Raghupati, Ratipati, Haladhar, Lakshminath, Rameshwar, Shulpani, and the Modern Continuation.....	27

अध्याय १६ — Badgam Darhiara-Dharmapur Desh Salampur-Salampur-Salempur and Badgam Shalampur: Abhiram, Jay Ram, Raghunath, Santosh, Chandidatt, Pyarelal, Upendra, Narayandatt, and the Shalampur Register..	28
अध्याय १७ — Khaual Simbarwad Gramaramabh: Jahanpur, Jamua-Baradbata, Chikni, Rahua-Balua, Mahamahopadhyay Prajapati, Vachaspati, Umapati, Ganapati, and the Nasira-Dighdi Threshold.....	30
अध्याय १८ — Nasira Desho Dighdi: Bhulek, Keuntu, Bhavanand, Anand, Bhairav, Manmohan, Ramanikant, Pashupatinath, Dharmanand, and the Purnia Modern Continuation.....	32
अध्याय १९ — Rajanpura Pu Darhiara Koilakh, Sarouni, and Dharmapur-Deshe Hemnagar: Kanhaiya, Dwarikanath, Lakshman, Prayagdatt, Rohini, Vishnudatt, Jagatmani, and the Phoolsara-Baradbatta Continuation.....	34
अध्याय २० — Ratauli Darhiara, Jahanpur, Naili, Shrinagar, Ramai-Rahatmina-Bhadra: Kamalpani, Devdhar, Dharanidhar, the Poet-Line, Baburam, Nandan, Meghnath, Gungu-Manti, Ramai-Darhiara Ratauli, and the	36
अध्याय २१ — Rajora Mandar Nasira-Deshe Phulbadiya-Gondwara: Mahamahopadhyay Batesh, Pashupati, Raghupati, Ratipati, Yagyapati, Pothia Sultanpur, Palasi, Belbadi Jhotan Jha, and Shripur-Deshe Kodhila.....	38
अध्याय २२ — Satlakha-Satauli Gramaramabh: Chakrapani, Prithvidhar, Purushottam, Harikar, Shrikar, Ruchikar, Ratnakar, Maan, Murari, Jaydev, Ratnapani, Kouskidatt, Mushtauli-Phulwadi-Chakradhar, and Satl.....	40
अध्याय २३ — Jagatpur Pu Mandar-Chuna-Chu Pur Pu Belbadi: Nardev, Arjun, Gopal, Harikar, Jagannath, Vishwambhar, Rajora-Mandar Sheshansh, Khawaspur, and Bakhri-Harshdatt Jha.....	42
अध्याय २४ — Sodarpur Pu Mani Gramaramabh: Vishwanath, Gopinath, Batesh, Pashupati, Rameshwar, Ratnakar, Gondi, Krishn, Yagyapati, Lakshman, Modinath, Radhanath, and Khajuri-Bhikhari Mishra.....	44

अध्याय २५ — Raiyam Ghoshiyam Gramaramabh: Manbodh, Mangani Ram, Tilaknath, Chandranath, Nasira-Haveli Pokharia, Harimohan, Krishnamohan, Kanchinath Kiran, and the Sakuri-Belauch Threshold.....	46
अध्याय २६ — Sakuri Belauch Gramaramabh: Shivdas, Tivyakara, Keuntu, Purai, Gunakar, Ramkrishna, Devanand, Ratnapati-Jhingur, Gauridatt, Buddhinath, Rajkumar, Vasukinath, and the Bhanupunur-Panichobh Thr..	48
अध्याय २७ — Bhanupunur Pu Panichobh Gramaramabh: Ramdev, Thitho, Jiveshwar, Bhanukar, Chandrakar, Jivdhar, Shrinath, Hingu, Durgadatt, Narayandatt, Gangadhar, Anantram, Bhavdev, Ranjan, and the Ruchouli...	50
अध्याय २८ — Ruchouli Ekharā Gramaramabh: Jyotirvid Harishwar, Gunishwar, Hridayeshwar, Baburaiya, Vyakaran Ramchandra, Shrotriya Gangesh, Rajendra, Dharbharan, Vishwambhar, Judge Rameshwar, and the Sulh.....	52
अध्याय २९ — Sulhani Naraun Gramaramabh: Mahidhar, Udayakar, Ratnakar, Dalu, Madhukar, Lakshman, Ramkrishna, Dharmeshwar, Tulakrishna, Khokha Devanath Jha, Jagmohan, Harimohan, and Ufarail Khokha.....	54
अध्याय ३० — Tripurau Pu Li Naraun Gramaramabh: Dakra-Dihiya, Vishweshwar, Gaurishwar, Mahamahopadhyay Harishwar, Saraswati Ram, Dharadhar, Gangadhar, Raghudev, Ruchidev, Lakshmipati, Rudrapati, and the	56
अध्याय ३१ — Nagwad Ghosot Gramaramabh: Vasudev, Divakar, Buddhikar, Govind, Lakshminath, Vidyapati, Damodar, Ramnath, Agamacharya Devanath, Gopinath, Madhusudan, Janardan, Haridas, Shubhankar, Fakir, Is.....	58
अध्याय ३२ — Asi Ekharā Gramaramabh: Nasira-Deshe Pada, Vishwanath, Nandan, Bhanjan, Bhairam, Kanhuram, Shambhunath, Kuli, Bhaynath, Pratapanath, Kalikant, Shivanand, Pokharia, and Nasira-Deshe Bhadari.....	60
अध्याय ३३ — Gangora Budhwal Gramaramabh: Gondwara-Phulbadiya, Haveli-Radheli, Lotan, Rudra, Rangai, Rameshwar, Shivdatt, Pitambar, Dharanath, Khushi, Domai, Bhola, Rajendra, and the Aamdanda Close.....	62

अध्याय ३४ — Badhiyam Pawauli Gramaramabh: Nasira-Haveli Sauria,
Ravidatt, Bhagirath, Jagannath, Janardan, Vishwanath, Ram, Ramchandra,
Ratinath, Kamal, Narayan, Manorath, Rajaram, and the Devhar Thresho...64

अध्याय ३५ — Devhar Devhar Mul-Mu Gramaramabh: Jaykar, Sagar,
Matikar, Lakshmikar, Gunakar, Kameshwar, Rajoo, Haldhar, Narsingh,
Brahmeshwar, Umapati, Narayan, Haradatt, Krishnadev, Nehal, Sitaram, Virna
.....66

अध्याय ३६ — Shandilya-Gotre Brahmpura Pu Sako(b)ra-Kobara, Masuria-
Alay: Delhan, Kanh, Ram, Vishweshwar, Shrinath, Dharmnath, Vidyadhar,
Yashodhar, Chintamani, Narhari, Dharmeshwar, Jaydev, Rupnarayan,.....68

अध्याय ३७ — Kanhouli Parwaha: Ruchikar, Anandkar, Mitrakar, Jasai,
Rajiv, Hariram, Vyakaran Halayudh, Baburam, Nityanand, Kalanand,
Shardanand, Ramanand, Kripanand, Vibhuti, and the Ekharas-Sangram Thres
.....70

अध्याय ३८ — Ekharas Sangram Gramaramabh: Dom Tekari,
Chaturvedadhyaya Kamdev, Yajnik Parashuram, Shridhar, Balbhadra,
Shrirang, Santosh, Ratneshwar, Ruchikar, Harinath, Gangeshwar, Theghanand,
Ramanand,.....72

अध्याय ३९ — Ekharas Sangram Sirsia Gramaramabh: Bhorilal Jha, Chola Lal,
Sona Lal, Achmit Lal, Ajwalal, Bhupal Lal, Achkalal, Banmali, Shivanand,
Bhavani Kant, Madhurapati, Lalbihari, Mahopadhyaya Shrinat.....74

अध्याय ४० — Cross-Analysis, Reference Apparatus, and Consolidated
Reading Tables.....76

सम्पादकीय भूमिका

पञ्जीक व्याख्या करैत व्यक्ति, ग्राम, गोत्र, मूल, सन्तति, विवाह, मातृक आ उपाधिसूचक पद अलग-अलग पढब आवश्यक अछि। मूल अंग्रेजी ग्रन्थक व्याख्या आ ऐतिहासिक पञ्जीक स्वतन्त्र प्रत्यक्ष पाठ एकहि प्रमाणस्तर नहि। एहि समीक्षामे उपलब्ध मूल पुस्तकक दावाक तर्कसंगति, पाठ-विभाजन, प्रमाणक सीमा आ सामाजिक व्याख्याक औचित्य जाँचल गेल अछि।

पहिने स्रोतमे लिखल कथन, तकर बाद व्याख्यात्मक अन्वय, आ अन्तमे ऐतिहासिक अनुमान—ई क्रम निर्णायक अछि। पञ्जीक वंशस्मृतिसँ सामाजिक सम्बन्धक अध्ययन सम्भव अछि; मात्र एहि पाठमात्रसँ जैविक डीएनए-परीक्षणक प्रमाण नहि बनैत।

अध्यायवार मूल अध्ययन

अध्याय १ — पञ्जीक सङ्केतभाषा आ विवाह-अनुमतिक अभिलेख
 पहिल अध्याय बतबैत अछि जे पञ्जीक पाँति 'सुत', 'सुता', 'अपरा', 'प्र०',
 'दौ' आ 'देशे' सन संकेतसँ बनल सघन सम्बन्धचित्र अछि। एही पदक
 स्पष्ट व्याख्या बिना एकटा व्यक्तिक वंश, पत्नी, कन्या आ ग्रामक शृंखला
 उलटा भऽ सकैत अछि। एहि पुस्तकक पद्धतिगत सफलताक आधार
 सङ्केतकें आधुनिक परिचित शब्दक तुरन्त विकल्प नहि मानब अछि।
 विवाह-संबद्ध अभिलेख पढ़ैत समय मातृसम्बन्ध, श्वसुर-सम्बन्ध आ
 वंशमूलक अलग चिह्न स्वीकार कएल जाए। वर्गीकृत पञ्जीक उपयोग
 विवाह-अनुमति लेल भऽ सकैत छल, मुदा सामाजिक मान्यता, विधिक
 वैधता आ वास्तविक विवाहक ऐतिहासिक घटना एकटा नहि। पञ्जीमे
 उल्लेखक अर्थ कि मान्यता, संकेत कि सम्पन्न सम्बन्ध—ई प्रश्न हर पाँतिक
 क्रममे फेर उठैत अछि।

आधुनिक पदव्याख्याक सुविधा संग मूल पाठक अस्पष्टता जाहिर करब
 अध्यायकें अधिक प्रमाणिक बनबैत अछि। जँ दूटा समान नाम वा दोसर
 विवाहक शाखा पुनः भेटैत अछि, तँ सम्बन्धक दिशा स्पष्ट करेबाक लेल
 मूल पाँति, उपाधि, ग्राम-प्रस्थान आ सन्दर्भ-सङ्केत जोड़बाक चाही। एहि
 सावधानीक बिना परिचित पारिवारिक भाषा शोध-सत्य बनबाक भ्रम उत्पन्न
 कऽ सकैत अछि।

अध्याय २ — बल्लाल सेन, हलायुध आ विद्वानक प्रतिष्ठाक आरम्भिक आख्यान

दोसर अध्याय वंशावलीक आरम्भ राजा बल्लाल सेन आ महामहोपाध्याय हलायुधक संग करैत अछि। राजसत्ता आ विद्वत्प्रतिष्ठाक स्मृति एतय परिवार-अभिलेखक सार्वजनिक वैधताक भाषा बनैत अछि। वंशक प्राथमिक खण्डमे नामक संग पदवी जोड़ल जाएब केवल अलङ्कार नहि, सामाजिक मान्यताक दावा सेहो अछि।

एहि अध्यायक एकटा केन्द्रीय आलोचनात्मक प्रश्न स्रोत-साक्ष्यक स्तर अछि। दरबारी परिचय वंशपाँतिक भीतर वर्तमान रहल ऐतिहासिक स्मृति होइत अछि; ओकरा स्वतन्त्र शिलालेख, पाण्डुलिपि वा समयसाम्यसँ जाँचने बिना प्रमाणित इतिहासक अन्तिम कथन नहि बनाओल जाए। हलायुधसँ सम्बन्धित रत्नेश्वर, हल्लेश्वर, सुरेश्वर, जीवेश्वर आदिक क्रम व्याख्यात्मक महत्त्व रखैत अछि, मुदा नामसाम्य वा उपाधिसाम्य पर्याप्त प्रमाण नहि अछि।

ग्रन्थक बल ई अछि जे विद्वानक परम्पराकेँ सामाजिक नेटवर्कमे स्थापित करैत अछि। परम्पराक सम्मान आ पाठालोचनाक संशय परस्पर विरोधी नहि। राजकीय ख्यातिक उल्लेख, वास्तविक पितृसम्बन्ध, कालक्रम आ अलग ग्रामक शाखा—एहि चारूकेँ पृथक् प्रमाण-वर्ग मानल जाएब चाही। ओहि विभाजनसँ प्रतिष्ठाक स्मृति आ ऐतिहासिक व्यक्तिक अनुसंधान दुनू सम्भव रहत।

अध्याय ३ — फूलसरा-हरौत-पोठिया सुलतानपुर : ग्रामजालक विस्तार
तेसर अध्याय राज-विद्वानक आरम्भिक फ्रेमसँ निकलि फूलसरा, हरौत,
पोठिया सुलतानपुर, वरदहा आ मजलिसपुरक जटिल घर-जालमे प्रवेश
करैत अछि। पिता-पुत्रक संग कन्या, पत्नी, वैवाहिक सम्बन्ध आ
अतिरिक्त शाखाक नोंद देखबैत अछि जे पञ्जी गृहकथाक एकटा रेखा नहि,
ग्रामान्तरक सम्बन्ध-पञ्जी अछि।

‘अपरा’ सन चिह्न अतिरिक्त विवाह वा दोसर शाखाक सन्दर्भमे अत्यन्त
सावधानी माँगैत अछि। एकहि व्यक्तिक नाम बहु ठाम देखबैत सम्बन्ध
जोड़ब आकर्षक अछि, किन्तु भिन्न पाँतिक बीच समानता सिद्ध करबाक लेल
पितृनाम, ग्राम आ अगिला नातेदारीक मेल चाही। अभिलेखक संक्षिप्तता
टिप्पणीकारकें प्रलोभन दैत अछि जे ओ रिक्त स्थानकें घटनाक कथा बना
देथि; समीक्षककें ओकर विरोध करबाक चाही।

एहि अध्यायक कृति-मूल्य लघु सूत्रसँ सामाजिक बनावट देखेबामे अछि।
तथापि आधुनिक पुनर्निर्माणक प्रत्येक पाँति लेल मूल स्रोत-सङ्केत, पाठभेद
आ अनिश्चितताक चिह्न आवश्यक अछि। विशेषतः कन्या-पक्षक सम्बन्ध
केवल पुरुषवंशक विस्तार नहि, भिन्न पारिवारिक नेटवर्कक सूत्र अछि। एहि
बहुधा सम्बन्धकें अलग कोटिमे लिखला पर सामाजिक इतिहास अधिक
विस्तृत होइत अछि।

अध्याय ४ — शिव हरिअम्ब, सन्दहपुर-दिघोय आ दन्ती-चोपडा बखरीक वंशजाल

चारिम अध्याय 'Shiva Hariam, Sandahpur Didhoy, and Danti-Chopra Bakhari' पहिनुक फूलसरा-हरौत-पोठिया सम्बन्धजालक अगिला खण्ड खोलैत अछि। शिव हरिअम्बक विस्तारमे झिंगुर, शशिनाथ, फिरंगी, दुलार आ चन्द्रवती सन नामक संग दोसर शाखा, कन्या आ विवाहघर जोड़ल गेल अछि। पुस्तक बेटीक नाम तारा, मंजुला, मीरा आ दुर्गाक उल्लेख कऽ पुरुषवंशक बाहरी सीमा देखबैत अछि : घरक इतिहास केवल पुरुष-सन्ततिक सीधा आलेख नहि अछि, विवाहक माध्यमसँ जोड़ल दोसर घरसभ सेहो ओकरे अभिन्न हिस्सा अछि।

अध्याय सन्दहपुर-दिघोय सँ दन्ती-चोपडा बखरीक दिशा तक अनेक पुनरावृत्त ग्रामनामक सहायता सँ स्रोत-पाँति पढ़ैत अछि। माधव-गोन्दू, यदुनन्दन-देवनारायण, विवेकानन्द-दयानन्द-आदित्यानन्द, गंगाराम-गंगाधर आदि समूहक चर्चा करैत समय वैवाहिक सम्बन्ध, शाखा-परिवर्तन आ पछिला आधुनिक पेशाक संकेत एकठाम उपस्थित अछि। मुदा एहि गहन समूहकँ एकटा अकाट्य अखण्ड वंशक कथा बनाबय से सावधानी माँगैत अछि। सम्बन्धक कड़ी कतेक ठाम स्पष्ट अछि आ कतेक ठाम पुस्तकक विवेचनपर टिकल अछि, से अलग-अलग दर्ज रहय।

दन्ती आ चोपडा बखरीक समूहमे 'कवि गंगाधर' सन विद्वत् पद साहित्यिक इतिहासक सम्भावित प्रवेशद्वार अछि। ओहि पदक महत्त्व नकारल नहि जा सकैत अछि, तथापि साहित्यकारक स्वतंत्र पहचान, कृतिक प्रमाण आ काल ठहराबय लेल शिलालेख, पाण्डुलिपि वा प्रकाशित समकालीन साक्ष्यक खोज आवश्यक अछि। एहि फरकक बिना पञ्जीक एकटा उपाधिकँ पूर्ण साहित्यिक जीवनीक स्थान देबाक जोखिम रहैत अछि।

लेखक किछु पछिला प्रविष्टिमे छूटल बिन्दु आ क्षतिग्रस्त रूप सेहो स्वीकार करैत छथि। ई सीमा सुधारबाक नामपर कन्याक विवाह-सम्बन्ध वा वंशजक

सूचीमे अनुमानित नाम घुसौनाइ ठीक नहि । चारिम अध्यायक सकारात्मक उपलब्धि बहु-ग्राम आ बहु-पीढ़ी स्मृतिक विस्तार अछि; ओकर आलोचनात्मक आवश्यकता प्रत्येक कड़ीक स्रोत-पाँति आ निश्चितताक स्तर सुरक्षित रखब अछि ।

अध्याय ५ — महादेव दिघड़ी, बेहट-खण्डवला आ पद्मपुरक आधुनिक विस्तार

पाँचम अध्याय 'Mahadev Digdhi, Behat Khandwala-Parbaha, Padmapur, and Pada' आधुनिकीकरणक बीच पुरान पञ्जी-सूत्रक निरन्तरता पढ़ैत अछि। द्वारिकानाथ-कुंजमोहन-उग्रमोहन सँ शुरू कऽ गंगाधर आ अन्य शाखा ग्राम-सम्बन्धक साथै आगाँ चलैत अछि; तरौनी-कर्महा, संग्राम-एकहरा आ सोदरपुर-सम्बद्ध संकेत शाखासभकें अन्य ग्रामक घर-जालसँ जोड़ैत अछि। एहि ठाम नव ग्रामशीर्षक सदैव पूर्णतः नव परिवारक प्रारम्भ नहि; कखनो पुरान जालमे अध्ययनक नव केन्द्र होइत अछि।

बेहट-खण्डवला-परबाहा, पद्मपुर आ पाडाक अनेक नामक संग वैयाकरण, आचार्य, ज्योतिषी, अध्यापक आ आधुनिक उच्चशिक्षाक पद देखाइत अछि।

एहि माध्यमसँ पञ्जी केवल परम्परागत विद्वत्-प्रतिष्ठा नहि, पछिला शिक्षित परिवारक स्मृति सेहो संचित करैत अछि। तथापि कोनो पद वा पेशाक उल्लेख सँ शैक्षिक उपाधि, नियुक्ति-दिन वा इतिहासक निर्णायक प्रसंग स्वतः प्रमाणित नहि होइत अछि। पञ्जीक रेखांकित सामाजिक रूप आ व्यक्तिगत जीवनीक बाह्य प्रमाण अलग श्रेणी मानब चाही।

अध्यायमे शिलावती, जम्बावती, सीतावती, हीरा, सुलोचना आ आधुनिक कन्या-नामसभक अनेक उल्लेख छथि। स्त्रीक एहि उपस्थिति कें सजावट नहि, शाखा जोडनिहार सामाजिक कडीक रूपमे पढ़ब पुस्तकक उल्लेखनीय योगदान अछि। मुदा स्त्रीक नाम सूचीमे रहनाइ आ स्त्रीक इच्छाक साक्ष्य भेटनाइ दू अलग बात। विवाहक दर्ज संरचना सँ परिवारगत गठबन्धन देखल जा सकैत अछि; एहि आधारपर महिला-जीवनक सम्पूर्ण निर्णय, अधिकार वा स्वायत्तता निष्कर्षित नहि होइत अछि।

पूर्णिया, कटिहार, रानीगंज, पश्चिम बंगाल आदि स्थानक स्मृति पञ्जी-विश्वक विस्तृत भूगोलक सङ्केत अछि। एकर आधारपर खोजपरक ग्राम-

जाल बनेबाक सम्भावना अछि, मुदा आधुनिक जिलाक ठिकाना केँ प्राचीन प्रमाणक रूपमे आरोपित नहि करब चाही । पाँचम अध्याय पुरान सूत्र आ आधुनिक प्रविष्टिक बीचक सततता देखबैत अछि—ई महत्त्वपूर्ण अछि; तथापि 'कखन जोड़ल गेल' प्रश्न कतेको प्रविष्टि लेल खुलल राखब पड़त ।

अध्याय ६ — डोम टेकारी ग्राम : विद्वान परम्परा आ कन्या-सम्बन्धक घनत्व

छठम अध्याय 'Dom Tekari Gram: Jayaditya, Pashupati, Vasudev ...' नव ग्राम-उद्घाटन 'अथ डोम टेकारी ग्राम' सँ आरम्भ होइत अछि। महामहोपाध्याय जयादित्यक विद्वत्-संकेत, हरदत्तक शाखासभ, पशुपति आ वासुदेवक विस्तृत सन्तति तथा आधुनिक नामक बहुलता एकहि अभिलेखीय रूपरेखामे आबैत अछि। पुस्तक एहि समूहकें पूर्व अध्यायक अन्तिम पन्नपुर आ पाड़ा सम्बन्धसँ अलग नव इकाइ मानि स्रोतक क्रम सुरक्षित करैत अछि। ई सम्पादकीय निर्णय महत्वपूर्ण अछि, किएक तँ ग्राम-उद्घाटनक चिह्न हटला पर नव वंशगुच्छ पहिनुक पाँतिक नीचाँ गलत समाहित भऽ सकैत अछि।

गंगादत्त-वैयाकरण कृष्णराम, धीरकान्तक वंश-विस्तार आ अनन्तलालक आधुनिक शाखासभक प्रसंग देखबैत अछि जे विद्वानक उपाधि सँ सरकारी सेवा, वैज्ञानिक शिक्षा आ आधुनिक पेशा धरि स्मृतिक सामग्री बदलैत रहैत अछि। एतय 'निरन्तरता'क अर्थ एके सामाजिक श्रेणीक स्थिर रहनाइ नहि, बदलैत समयमे अपन परिवारक सम्बन्धचित्तकें पुनः दर्ज करब सेहो अछि। तथापि जँ एकहि व्यक्ति वा पेशाक उल्लेखक स्रोत-अवधि अज्ञात अछि तँ ओकरा कालक्रमक निश्चय बनौनाइ अनुचित होयत।

अध्याय अनेक स्त्रीनाम आ बेटी-पक्षक विवाहसम्बन्ध लिखैत अछि। दुर्गा, जम्बावती, नागेश्वरी सन नामक संग परिवारक अन्य स्त्रीसंबन्ध निरन्तर पुनरावृत्त होइत अछि; समीक्षा लेल ई केवल गनतीक प्रश्न नहि। कतेक कड़ी प्रमाणित पुत्री-सम्बन्ध अछि, कतेक वैवाहिक घरक जोड़, आ कतेक नाम मात्र—एहि भेदसँ नातेदारीक जाल सटीक बनैत अछि। स्रोतमे जतेक चिन्ह स्पष्ट अछि ओतबे रूपमे एकरा चित्रित करब चाहिए।

पञ्जीमे विस्तार सँ उद्धृत पछिला पेशागत उपाधिसभ दर्शबैत अछि जे वंश-अभिलेख परिवर्तनशील समाजक हस्तलिखित साक्षी भऽ सकैत अछि।

छठम अध्यायक मुख्य उपलब्धि डोम टेकारीक शाखासभकेँ ग्राम, उपाधि आ कन्या-मार्गक संयुक्त रूपमे पढ़ब अछि; ओकर मुख्य सीमा अत्यधिक सघन नामावलीमे पाठक लेल प्रत्येक सम्बन्धक तत्क्षण स्वतंत्र परीक्षण कठिन होबय अछि। स्रोत-पाँति अनुसार शाखा-सारिणी आ स्त्री-सम्बन्धक स्वतंत्र अनुक्रमणिका एहि सम्भावित कठिनाई घटा सकैत अछि।

अध्याय ७ — घोड़ाघाट-रतिपाड़-बेलौंच : विवाहक विस्तारित क्षेत्र
सातम अध्याय घोड़ाघाट, रतिपाड़ आ बेलौंचक नव ग्रामशीर्षकमे वासुदेव
सँ मनोहर धरि वंशक्रम आ बियाह-संबन्ध पढ़ैत अछि। एकटा नामक
उपस्थिति वंशसन्ततिक स्थान आ वैवाहिक नातेदारी दुनूक संकेत भऽ सकैत
अछि।

वासुदेव-दुर्गादत्त-ठकरू-भीम-मनोहरक स्रोत-क्रम अध्यायक एक उपयोगी
आधार अछि; मुदा जहिना स्रोतमे कड़ी लिखल अछि तहिना पाठक समक्ष
राखल जाए। तात्कालिक पुत्र आ व्यापक वंशजक अन्तर बिना एकहि
परिवार-वृक्ष बनबैत समय भ्रम होयत।

“The section opens with Vasudev’s son Durgadatt, then Durgadatt’s son
Thakaru, and then Bhim.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 7]

“These women are placed into marriage networks: Shantavati through Ratauli
Darhiara and Dular, Shankarvati through Narsam Baliyas and Jagatmani, and
Vani through Khadik Khauval and Yogi’s son Bhai.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 7]

अध्याय ८ — रतनपुर-रभिडा-बनैली : राजशाखाक प्रतिष्ठा

आठम अध्याय रतनपुर, रभिडा, बनैली आ परवाहा-सम्बद्ध राजशाखाक जाल पर केन्द्रित अछि। राय जहाद सिंह आ अन्य उपाधिधारी व्यक्तिक नामक उपस्थिति सामाजिक प्रतिष्ठाक महत्त्वपूर्ण स्रोत अछि। मुदा राजकीय पद, लिखित जमीनी अधिकार आ सम्मान-सूचक पदवीक प्रमाण अलग-अलग अछि।

शाखाक विवाहजालकें कुलप्रतिष्ठाक कथाक संग निःसन्देह मिला देब अनुचित अछि। ग्रामनाम, पदवी, विवाह-सम्बन्ध आ उत्तरवर्ती भौगोलिक दायरा संगहि राखल जाए तँ सामाजिक इतिहास अधिक स्पष्ट होयत।

“Abhayanaath’s daughter or female line connects with Khauval through Brajnath’s son Dinanath, and with Sakma-vasi Gadhi Alay through Chamu’s son Bhuvan.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 8]

“The next chapter should begin with बडगाम दरिहरा असूरा.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 8]

अध्याय ९ — बड़गाम-दरिहरा-असूरा : कविक वंश आ पदवी

नवम अध्याय रविकर सँ कवि धनपति, गोवर्धन, शूलपाणि आ परवर्ती नामधरि अनेक विद्वत्-सूत्र देखैत अछि। ‘भक्त कवि’क उपाधि सामाजिक स्मृतिक साक्ष्य अछि, स्वतंत्र साहित्यिक कृतिक पूर्ण सूची नहि।

अध्यायमे एही शाखाक चोपड़ा बखरी-तेतरिहार-सोदरपुर सम्बन्ध खोलल गेल अछि। एकहि पदवी वा ग्रामक समन्वयसँ जीवीत व्यक्ति अभिन्न प्रमाणित नहि; पुनःसमीक्षा लेल मूल सम्बन्धक क्रमांक आवश्यक अछि।

“The first marriage link goes to Tetarihar Sodarpur through Kamalpani’s son Hira.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 9]

“The next chapter should begin with the next formal heading: बलियास ओगही-द्वाशय, बनैली, कोबरा (कोहबरा).” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 9]

अध्याय १० — बलियास-ओगही-बनैली : बीजी पुरुषक स्थान

दसम अध्याय बलियास-ओगही-द्वाशय-बनैली-कोहबराक शाखा पढैत अछि। 'बीजी पुरुष' धरनीधरक भूमिका वंशक्रमक आरम्भिक आधार मानल गेल अछि; मुदा आरम्भिक बिन्दुक इतिहास आ अभिलेखक वास्तविक पाण्डुलिपि-तिथि भिन्न प्रश्न अछि।

पद्मनाभ, श्रीनिधि आ हरिनाथ सम्बन्धी कड़ी अभिलेखक आन्तरिक क्रमद्वारा पढबाक चाही। नव स्थानक उल्लेख सीधा नव बसोबाक गवाही नहि; विवाहसँ बनल मार्ग सेहो सम्भव अछि।

“The source immediately places the branch in the Ekma Baliyas field through Biji Dharanidhar.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 10]

“Ratkar's son Naruk is connected with Ghusaut and Ravikar.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 10]

अध्याय ११ — पकलिया-महिषी-पूर्णिया : क्षेत्रीय जाल

एगारहम अध्याय पकलिया-महिषी-धर्मपुर-काजी पूर्णियाक सामग्रीकें मूलपुरुष, विवाहक कड़ी आ ग्राम-प्रसारक संग देखैत अछि। क्षेत्रनामक फैलाव समाजक गतिशीलता बुझय लेल उपयोगी अछि, मुदा प्रत्येक सम्बन्धकें भौतिक प्रवास कहला पर दस्तावेजसँ अधिक निष्कर्ष निकलि जाइत अछि।

हिंगु-मंगु, बलभद्र आ अन्य व्यक्ति-नामक एकसमान रूप अलग शाखामे भेटि सकैत अछि। पात्रक पहिचानक लेल पितृनाम आ ग्राम-क्रमक संयुक्त प्रमाण चाही।

“The section is a useful example of how the Panji shifts from one brother-cluster to a separate branch without long explanation.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 11]

“The branch is not a straight tree. It is a Purnia-linked marriage field with repeated crossings into Sodarpur, Darhiara, Khauai, Panichobh, Jajival, Kujouli, Karmah, and other houses. The correct decoding therefore reads each name through descent, place, marriage, title, alias, and branch-continuity.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 11]

अध्याय १२ — धर्मपुर दक्षिण रघुनाथपुर : कवित्वक पदवी आ क्षेत्र
बारहम अध्याय धर्मपुर-बलुआ-दक्षिण रघुनाथपुरक क्रममे वाचस्पति, भीम
आ सत्यकवि नित्यानन्द जकाँ उपाधिसँ सम्बद्ध नाम देखैत अछि। एतय
विद्वत्ताक चिह्न वंशरेखासँ अलग नहि रहैत अछि। तथापि पदवीसँ विशिष्ट
पुस्तकक रचना अथवा तिथि स्वतः प्रमाणित नहि होइत अछि।

अन्हरा-कटायीक आगूक संक्रमणकेँ मूल पाठक संरचना मानि राखनाइ
चाही; लेखकक विवेचनमे कोन बिन्दु निश्चित आ कोन अनुमान, तकर
अलग पहचान आवश्यक अछि।

“A reader should not skip the place phrase “अन्हरा कटाई हेमनगर, सरसी,
रघुनाथपुर, मदनपुर तमकुडा रहिकपुर.” It signals that the chapter is already
multi-settlement.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 12]

“Raghuni’s son Lakshmikant is linked with Chikni Panichobh and Maniram.”
[मूल ग्रन्थ, अध्याय 12]

अध्याय १३ — Katayi-Anhara Belepothia, Hemnagar: Hingu-Kamal, Matinath, Hira, Chiranjeev, Ugramani, Sundarmani, Devaraj Singh, and the Hemnagar-Khandwala Continuation

कटाइ-अनहरा, बेलेपोठिया आ हेमनगरक खण्डमे ‘पाँछा देखू’ सन प्रत्यावर्तन-सूत्र मूल अभिलेखक भीतरक सम्पर्क बतबैत अछि। एकरा स्वतंत्र पूर्वकालीन साक्ष्य नहि, पहिनुक प्रविष्टिक दिशासूचक मानबाक चाही। हिंगू, कमल, मातिनाथ आ हीराक नाम-सम्बन्ध विभिन्न शाखामे आयब समान व्यक्ति वा एके पीढ़ी सिद्ध नहि करैत। स्त्रीक उल्लेख जखन वैवाहिक जाल खोलैत अछि, तखन नामे नहि, ओहि स्त्रीक सम्बन्ध-पद सेहो अनुक्रमित हो।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“The heading “कटाइ-अन्हरा बेलेपोठिया, हेमनगर” begins a new chapter, but the phrase immediately following it, “पाँछा देखू:-”, tells the reader that this section is not a simple fresh start.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 13]

“The presence of Hati Sodarpur, Majhaura Karmah, and Oda Ekharā in one passage shows how the Panji preserves marriage movement.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 13]

एहि अध्यायक आरम्भमे मूल देवनागरी 'पाछाँ देखूः' सूत्र अछि; ई लेखकक अनुस्मारक नहि, मूल स्रोतक सन्दर्भ-पठनक सङ्केत मानल जाए। हिंगु-कमल आ परवर्ती कडीकें आधारहीन एकरेखीय वंश बनायब नहि; मूल पृष्ठक पाछाँक नोंद आवश्यक अछि।

अध्याय १४ — Asura-Suptani Gangoli and Singholi Mandar Danti: Brijmohan, Anand Mohan, Kamal Mohan, Babuji, Jagu, Gangadhar, Harijiv, and the Asura-Andhasur Continuation

असुरा-सुपत्नी गंगोली आ सिंगहोली-माण्डरक प्रसंगमे कमलमोहन, आनन्दमोहन आ पुत्रीक समूह वंशक बाहरी सम्पर्क देखबैत अछि। मुख्य आलोचनात्मक बिन्दु ई अछि जे पुत्रीजन्य सम्बन्ध कतेक स्पष्ट आ कतेक सम्पादकीय अन्वयपर आश्रित अछि। मूलमे जे नाँव सटीक मातृक अथवा सुता पदसँ जुड़ल अछि ओहि पाँति अलग राखल जाय, जखन कि केवल समीपस्थ नामक कड़ी प्रमाणित नहि मानल जाय।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

एहि अध्यायक विवेचनक सन्दर्भ ओकर मूल पाठक्रम अछि। पञ्जीमे व्यक्ति, ग्राम, शाखा, वैवाहिक सम्बन्ध आ उपाधि जतेक स्तरपर भेटैत अछि, ओ सभकँ बिना अतिरिक्त अनुमान अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

“This beginning shows that the heading carries more than one settlement.”

[मूल ग्रन्थ, अध्याय 14]

“After the Asura-Suptani Gangoli section, the source gives a second heading: “सिंहोली माण्डर दाँती अपर असूरा अपरा अन्धासूर श्रीपुर अपरधैत.” This heading is itself a compressed map.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 14]

बृजमोहन, आनन्दमोहन, कमलमोहन आ अन्य नामक आनुवंशिक अथवा पीढ़ीगत कड़ी निर्णायक बनावय लेल सम्बन्धसूचक चिह्न चाही। उपनामक मेलसँ समकालीनता अथवा एक माता-पिता सम्बन्ध सिद्ध नहि। एहि अध्यायक प्रशंसनीय पक्ष परवर्ती शाखा-सन्दर्भकँ एकठाम देखाएब अछि।

अध्याय १५ — Birwan Batheli: Mahamahopadhyay Batesh, Pashupati, Raghupati, Ratipati, Haladhar, Lakshminath, Rameshwar, Shulpani, and the Modern Continuation

बिरवान-बथेली खण्डमे बाटेश, पशुपति, रघुपति आ रतिपतिक उपाधि-

सम्बद्ध नामसभ वंशावलीक बौद्धिक प्रतिष्ठाक साक्ष्य अछि। मुदा वैदिक वा विद्वत् उपाधि विशिष्ट साहित्यिक रचनाक लेखक सिद्ध नहि करैत।

पनिचोभ आ नरउनक दिशामे खुलैत सम्बन्धकें प्रासंगिक पिता-पुत्र, विवाह आ ग्रामसूत्रक आधारपर चित्रित कएल जाय। एके वंशमे बादक पेशागत पहिचान आएलासँ पुरान पदक अर्थ पीछे घुराकऽ नहि बदलैत अछि।

पञ्जीमे उपाधि महत्त्वपूर्ण सामाजिक प्रमाण अछि, मुदा ओहि एकटा पदवीसँ व्यक्ति-विशेषक सम्पूर्ण कृति-सूची, नियुक्ति अथवा तिथि सिद्ध नहि होइत अछि। विद्वत् पहिचान लेल स्वतंत्र पाठ आ ऐतिहासिक साक्ष्य खोजब आवश्यक अछि।

ज्ञानक प्रतिष्ठा, परिवारक वंशक्रम आ वैवाहिक सम्बन्ध एकहि पाँतिमे भेटि सकैत अछि। एहि तीनूकें अलग दर्ज कएलासँ मिथिलाक बौद्धिक इतिहासक ओ रूप देखाइत अछि जे आधुनिक जीवनीमे हेरा जाइत अछि।

“The first descent cluster is compact: Batesh is followed by Pashupati, Raghupati, Adani, and Bharatpati.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 15]

“The source also names daughters or female-linked descendants: Hemvati, Chandravati, and Rudravati.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 15]

बटेश, पशुपति, रघुपति आदिक आगू ‘म०म०’ चिह्न विद्वत् प्रतिष्ठाक अभिलेखीय स्तर खोलैत अछि। मुदा पदवी वंशक पूर्ण जीवनवृत्तान्त नहि। पानिचोभक सम्बन्ध स्वतंत्र पार्श्व-सूत्र अछि, एकरा मूल शाखासँ अस्पष्ट ढङ्गें मिला देब उचित नहि।

अध्याय १६ — Badgam Darhiara-Dharmapur Desh Salampur-Salampur-Salempur and Badgam Shalampur: Abhiram, Jay Ram, Raghunath, Santosh, Chandīdatt, Pyarelal, Upendra, Narayandatt, and the Shalampur Register

बड़गाम-दरिहरा आ सलामपुर-सलेमपुरक अनेक लेखनरूप मूलग्राम आ स्थानीय उच्चारणक दुविधा खोलैत अछि। ई नामान्तर एकहि स्थल अछि कि नजिकक भिन्न ग्राम, एहन प्रश्न मानचित्र वा स्वतंत्र अभिलेखसँ मिलान माँगैत अछि। सन्तोषक पाँच पुत्रक समवेत उल्लेख एहि समूहमे संरचनागत संकेत अछि, मुदा ओहि शाखाक सम्पूर्ण वंशजक सूची अपने-आप नहि। स्रोतगत पाठरूप आ शोधक सामान्यीकृत नाम दुनू पृथक् राखल जाए।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

“The naming pattern is significant. The Panji gives Santosh as a descent point, but it immediately multiplies the branch through five sons. Each son is then connected to a different social movement. Bhairavdatt leads to Kaushkidatt and Pushpanath; Bechu leads to Hadi, Ganeshdatt, and Nand Kumar...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 16]

“This section is one of the clearest examples of branch-continuity in the chapter.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 16]

सलामपुर, सलेमपुर आ शालामपुर जकाँ निकट नामक बीच समान स्थल वा भिन्न पाठक प्रश्न खुलल रखनाइ आवश्यक अछि। अभिराम सँ जय रामक

वंशसूचक कडी पाठमे भेटैत अछि, मुदा नामक रूपान्तरकै केवल वर्तनी दोष
मानि चुप्पे संशोधित करब स्रोतक प्रमाण हेराएत ।

**अध्याय १७ — Khauai Simbarwad Gramaramabh: Jahanpur,
Jamua-Baradbata, Chikni, Rahua-Balua,
Mahamahopadhyay Prajapati, Vachaspati, Umapati,
Ganapati, and the Nasira-Dighdi Threshold**

खौआल-सिमरवाडक ग्रामारम्भमे प्रजापति, वाचस्पति, उमापति आ गणपतिक उल्लेख प्रतिष्ठा आ वंशक संयुक्त पाठ माँगैत अछि। जौहरपुर आ जमुआ-बरदबट्टा सन स्थानस्मृति पूरब-पछिमक शोधार्थ महत्त्वपूर्ण अछि, किन्तु एकल स्थलसाम्य परिवारक अभिन्नता स्थापित नहि करैत। विद्वत् व्यक्तिक पुनर्परिचय लेल पितृनामक कड़ी, ग्रामनाम आ पदवी एक संग पहिचानब अनिवार्य अछि।

संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना 'वहाँ गेल' आ 'वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित' दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“The opening is therefore not merely genealogical. It says that the Khauai-Simbarwad branch begins with a scholar-line, and that this scholar-line is remembered through titles as much as through sons. Prajapati is the anchor; Vachaspati and Umapati divide the descent; Ganapati carries the branch into the...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 17]

“Balkrishna is identified as “पूर्वाचल मिथिलाक प्रथम आईएएस.” This is one of the strongest modern title markers in the chapter.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 17]

ग्रामारम्भक उपरान्त महामहोपाध्याय प्रजापति आ वाचस्पति आदिक उल्लेख शाखाक शिक्षित स्मृति उजागर करैत अछि। प्रारम्भिक उपाधि धारक आ उत्तरवर्ती पारिवारिक व्यक्तिक अभिन्नता अनुमानसँ न जोडल

जाए। अलग-अलग जमानाक नोंदक परत लेखकक प्रस्तुतिक एकटा गम्भीर
आलोचनात्मक विषय अछि।

अध्याय १८ — Nasira Desho Dighdi: Bhulek, Keuntu, Bhavanand, Anand, Bhairav, Manmohan, Ramanikant, Pashupatinath, Dharmanand, and the Purnia Modern Continuation

नसिरा देश-दिघडी प्रसंगमे भुलेख, केउन्तु आ भवनन्दक नाम सँ आगाँ मन्मोहन-रमणीकान्तक शाखा विस्तृत होइत अछि। जुडी आ सुभद्राक बेटी-सम्बन्ध जखन कथाक भीतर आबैत अछि, वंशरचनाक पुरुषकेंद्रिकता आंशिक रूपसँ टूटैत अछि। पञ्जीमे दर्ज स्त्रीक नाँव मात्र पड़ोसी पाँतिक सजावट नहि; कखन ओ शाखा-गमनक निर्णायक सूचना अछि, से प्रत्येक पदसँ जाँचल जाए।

पञ्जीमे उपाधि महत्त्वपूर्ण सामाजिक प्रमाण अछि, मुदा ओहि एकटा पदवीसँ व्यक्ति-विशेषक सम्पूर्ण कृति-सूची, नियुक्ति अथवा तिथि सिद्ध नहि होइत अछि। विद्वत् पहचान लेल स्वतंत्र पाठ आ ऐतिहासिक साक्ष्य खोजब आवश्यक अछि।

ज्ञानक प्रतिष्ठा, परिवारक वंशक्रम आ वैवाहिक सम्बन्ध एकहि पाँतिमे भेटि सकैत अछि। एहि तीनूकें अलग दर्ज कएलासँ मिथिलाक बौद्धिक इतिहासक ओ रूप देखाइत अछि जे आधुनिक जीवनीमे हेरा जाइत अछि।

“The first chain is compressed but clear: भूलेसुत केउंटू, केउंटू-सुत भवानन्द, भवानन्द-सुत गतिराम, and गतिराम-सुत आनन्द.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 18]

“Dharmanand is one of the most important modern-title figures in this chapter.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 18]

‘भूलेसुत केउंटू’ जकाँ संक्षिप्त सूत्र वंशक्रमक अधिक प्रत्यक्ष आधार दैत अछि। एहि अध्यायमे ओकर विस्तार भवआनन्द, गतिराम, आनन्द धरि पहुँचैत अछि। जे जोड़ मूल शब्दसँ सम्भव अछि, से वैज्ञानिक; जे अतिरिक्त काल वा सामाजिक पदक अनुमान पर आधारित अछि ओकर प्रमाणस्तर अलग अछि।

अध्याय १९ — Rajanpura Pu Darhiara Koilakh, Sarouni, and Dharmapur-Deshe Hemnagar: Kanhaiya, Dwarikanath, Lakshman, Prayagdatt, Rohini, Vishnudatt, Jagatmani, and the Phoolsara-Baradbatta Continuation

रजनपुरा-दरिहरा-कोइलख आ हेमनगरक भीतर द्वारिकानाथ आ लक्ष्मणक दू शाखा कथनकेँ द्विखण्डित करैत अछि। परवर्ती 'दिगम्बर' सन पुनरावृत्त नामक अभिन्नता मानबाक पहिने शाखास्थान देखब आवश्यक अछि। पुरुष-उत्तराधिकारक मुखर विवरणक बीच विवाहक सुतासूत्र लिखल रहला पर तकर शोध-मान स्त्रीजगतक अध्ययनमे विशेष होयत।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कड़ीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

“कन्हैया”s daughter-side material is also preserved. The source records Rangkavati’s daughters अजानवती and सरस्वती. Ajanavati is connected with Baghwas-Sarisav through Panch Ek Nath’s son Yadav, while Saraswati is linked with Alay through Devidatt’s son Ramadatt. These daughter entries are not ornamental; they are the evidence of...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 19]

“प्रयागदत्त produces भूवनेश्वर and राधानाथ , with Dumaria - Hasouli - Sodarpur , Chandi , and Badrinath links.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 19]

‘कुल’क आगू भैया, वाचा, चोन्हा आ बंगाली जकाँ नाम आयल अछि।

एतय समान स्तरक व्यक्ति-नामक सूची आ पिता-पुत्रक क्रम अलग पहिचानल जाए। प्रारम्भक समूहकेँ पूरा वंशवृक्षक रूपमे बदलि देबाक पहिने मूल संक्षेपक छानबीन अपेक्षित अछि।

अध्याय २० — Ratauli Darhiara, Jahanpur, Naili, Shrinagar, Ramai-Rahatmina-Bhadra: Kamalpani, Devdhar, Dharanidhar, the Poet-Line, Baburam, Nandan, Meghnath, Gungu-Manti, Ramai-Darhiara Ratauli, and the

रतौली-दरिहरा सँ जहानपुर, नैली, श्रीनगर आ अररिया दिस गेल स्मृतिक निकटता बहुत लम्बा अन्तरालक अभिलेखीय संचयन सुझबैत अछि, मुदा ई स्वतः प्रवास-तिथि नहि बतबैत। कमलपाणि, देवधर, धरणीधर आ परवर्ती कवि-शाखाक उल्लेख प्रत्यक्ष साक्ष्य आ साहित्यिक पारिवारिक परम्परा अलग रखबाक अपेक्षा करैत अछि। पुरान शीर्षकक भीतर आधुनिक ग्रामनाम भेटलासँ पञ्जीक काल-परत जाँचबाक नव प्रश्न पैदा होइत अछि।

नामक दोहराव आ सम्मानसूचक शब्दक अनिश्चितता कारण साहित्यिक इतिहासक निष्कर्ष सावधान रहबाक चाही। लेखकीय पहचानकें मूल ग्राम वा वंशमूलक समानतासँ मात्र निश्चित नहि मानल जाए।

पञ्जीमे उपाधि महत्त्वपूर्ण सामाजिक प्रमाण अछि, मुदा ओहि एकटा पदवीसँ व्यक्ति-विशेषक सम्पूर्ण कृति-सूची, नियुक्ति अथवा तिथि सिद्ध नहि होइत अछि। विद्वत् पहचान लेल स्वतंत्र पाठ आ ऐतिहासिक साक्ष्य खोजब आवश्यक अछि।

“देवधर produces उदयकर , then the line moves through गोद्रे / गौद्रे and बाभन.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 20]

“Gaurinath’s further sons are हेमनाथ, मयानाथ, and कीर्तिनाथ, linked to Pavoli through Tengari’s son Sukhai and to Budhwal through Kamal Nayan.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 20]

कमलपाणिक सन्तति/शाखासँ देवधर, धरनीधर आ अन्य सम्बन्ध सामने अबैत अछि। काव्यपरम्पराक पदक उपस्थितिक कारण एही कडीकें सामाजिक आ साहित्यिक इतिहास दुनू सँ पढ़बाक प्रलोभन होइत अछि। साहित्यिक कृति-सूची लेल, मुदा, स्वतंत्र ग्रन्थसाक्ष्य चाही।

अध्याय २१ — Rajora Mandar Nasira-Deshe Phulbadiya-Gondwara: Mahamahopadhyay Batesh, Pashupati, Raghupati, Ratipati, Yagyapati, Pothia Sultanpur, Palasi, Belbadi Jhotan Jha, and Shripur-Deshe Kodhila

रजौरा-माण्डरक बटेश-पशुपति-रघुपति-रतिपति खण्ड विद्वानक उपाधि आ परवर्ती पारिवारिक सम्बन्धक निकटता देखबैत अछि। एहि उपाधिसभक पहिचान अलग प्रासंगिक ग्रन्थसाक्ष्यसँ मिललापर बौद्धिक वंशक दावा मजबूत बनत। अन्यथा प्रतिष्ठाक आवृत्तिक सूची सिद्ध इतिहास नहि।

एहि अध्यायक विवेचनक सन्दर्भ ओकर मूल पाठक्रम अछि। पञ्जीमे व्यक्ति, ग्राम, शाखा, वैवाहिक सम्बन्ध आ उपाधि जतेक स्तरपर भेटैत अछि, ओ सभकँ बिना अतिरिक्त अनुमान अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

“Pashupati produces कृष्णपति, linked with Alay through Ram.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 21]

“Batahu’s sons include बिहारी , नन्दीपति , राजकुमार , वंशमणि , खडगमणि , झोटन / दुभनी , and भवानीदत्त / पोचाई.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 21]

“Rajora Mandar Nasira-Deshe Phulbadiya-Gondwara:
Mahamahopadhyay Batesh, Pashupati, Raghupati, Ratipati,
Yagyapati, Pothia Sultanpur, Palasi, Belbadi Jhotan Jha, and
Shripur-Deshe Kodhila” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित
करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक
स्तर अलग-अलग पढबाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक
परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि;
मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि
बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि।
मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा
एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्याय २२ — Satlakha-Satauli Gramaramabh: Chakrapani, Prithvidhar, Purushottam, Harikar, Shrikar, Ruchikar, Ratnakar, Maan, Murari, Jaydev, Ratnapani, Kouskidatt, Mushtauli-Phulwadi-Chakradhar, and Satl

सतलखा-सतौली ग्रामारम्भ 'बीजी चक्रपाणि' सँ आरम्भ होइत अछि। बीजी पुरुष नामित वंशक अभिलेखीय आरम्भबिन्दु अछि, जैविक पहिल व्यक्ति नहि। चक्रपाणि, पृथ्वीधर आ पुरुषोत्तमक अनुक्रम स्रोतमे जतेक प्रदर्शित अछि, ताहिसँ आगाँक पीढ़ी-तिथि अनुमानित रहत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना 'वहाँ गेल' आ 'वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित' दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“The opening chain is direct and compressed : सतलखा सँ बीजी चक्रपाणि ; then पृथ्वीधर , पुरुषोत्तम , कृष्ण , हरिकर , श्रीकर , and रुचिकर.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 22]

“The source then returns to Mane’s line through Murari.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 22]

“Satlakha-Satauli Gramaramabh: Chakrapani, Prithvidhar, Purushottam, Harikar, Shrikar, Ruchikar, Ratnakar, Maan, Murari, Jaydev, Ratnapani, Kouskidatt, Mushtauli-Phulwadi-Chakradhar, and Satl” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढबाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

**अध्याय २३ — Jagatpur Pu Mandar-Chuna-Chu Pur Pu
Belbadi: Nardev, Arjun, Gopal, Harikar, Jagannath,
Vishwambhar, Rajora-Mandar Sheshansh, Khawaspur, and
Bakhri-Harshdatt Jha**

जगतपुर-माण्डर आ बेलबडीक ग्रामसूत्र पाठक भूमिकामे ऐतिहासिक गाम आ आन्तरिक मूलवर्ग दुनू रखैत अछि। नर्देव, अर्जुन आ गोपालक नामक पाँतिसँ विवाहक्षेत्र, उपाधि आ वंशानुवंशक भिन्न प्रकारक सम्बन्ध पहिचानय पडैत अछि। एकरेखीय सूची एहिठाम पर्याप्त नहि।

आलोचनाक मूल्य स्रोतक व्याख्या आ स्रोतसँ बाहरक सम्भावित ऐतिहासिक निष्कर्षक अलग रखबामे अछि। अस्पष्ट अथवा अनुपस्थित कडीक स्थान पर शोधप्रश्न लिखल जाए, प्रमाणित घटना नहि।

एहि अध्यायक विवेचनक सन्दर्भ ओकर मूल पाठक्रम अछि। पञ्जीमे व्यक्ति, ग्राम, शाखा, वैवाहिक सम्बन्ध आ उपाधि जतेक स्तरपर भेटैत अछि, ओ सभकेँ बिना अतिरिक्त अनुमान अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

“The Mitugune branch is especially important because it creates a daughter-line through रतिकर, रामकर, and ज्ञानकर, connected with Budhwal and Shubhankar’s son Kanha.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 23]

“The next internal note reads “खवासपुर पु पीछेदेखें धनी सुतसु डोमनः.” The instruction “पीछेदेखें” tells the reader that the line must be read by looking back to an earlier page or earlier branch.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 23]

“Jagatpur Pu Mandar-Chuna-Chu Pur Pu Belbadi: Nardev, Arjun, Gopal, Harikar, Jagannath, Vishwambhar, Rajora-Mandar Sheshansh, Khawasapur, and Bakhri-Harshdatt Jha” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकें पिता-पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्याय २४ — Sodarpur Pu Mani Gramaramabh:

Vishwanath, Gopinath, Batesh, Pashupati, Rameshwar, Ratnakar, Gondi, Krishn, Yagyapati, Lakshman, Modinath, Radhanath, and Khajuri-Bhikhari Mishra

सोदरपुर-मानी ग्रामारम्भमे विश्वनाथसँ गोपीनाथ धरि 'अपरा' प्रकारक निरन्तरता वर्णित अछि। एतय 'अपरा' अनिवार्य पुत्रार्थक चिह्न नहि, शाखा-सम्बन्धक संकेत भऽ सकैत अछि। अलग उपाधि-सूत्रक आधारपर गौण शाखाकें मुख्य सन्ततिमे मिलेनाइ अनुचित।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

“The first genealogy therefore does not begin with a bare individual; it begins with an “apara” continuation from महामहोपाध्याय विश्वनाथ through गोपीनाथ.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 24]

“The next internal heading reads “मानी सोदरपुर पु खोखा राधानाथ मिश्र : पिछेदेखें.” The phrase “पिछेदेखें” is a reading instruction.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 24]

“Sodarpur Pu Mani Gramaramabh: Vishwanath, Gopinath, Batesh, Pashupati, Rameshwar, Ratnakar, Gondi, Krishn, Yagyapati, Lakshman, Modinath, Radhanath, and Khajuri-Bhikhari Mishra” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्ति सँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकाहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्याय २५ — Raiyam Ghoshiyam Gramaramabh:

Manbodh, Mangani Ram, Tilaknath, Chandranath, Nasira-Haveli Pokharia, Harimohan, Krishnamohan, Kanchinath Kiran, and the Sakuri-Belauch Threshold

रायम-घोषियामक विवरणमे परशुराम-नरहरि सँ मनबोध आ गरीब दिस शाखाविभाजनक सूत्र अछि। शाखाक अलग स्थानीय सम्पर्क निर्देशित कएल गेल अछि; ओहिमे केवल नामसूची नहि, सम्बन्धक क्रमानुक्रम सुरक्षित रहय। आधुनिक खोजरूपक कारण मूलग्रामक रूप बदलि नहि जाए।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना 'वहाँ गेल' आ 'वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित' दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“चन्द्रनाथ produces इन्द्रनाथ, अमरनाथ, and लक्ष्मीनाथ. The line is joined to Araria, Ratouli-Darhiara, Gokhulnath's son वंशी, Tilay, and राय सुदय सिंह. The source then lists the daughter-field through राजेश्वरी, सरयुवती, यशोदा, अन्नपूर्णा, and बाबा दाय. Each of these names is linked to a marriage formula, creating...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 25]

“दिगम्बर produces अशोक and संजीव. The line connects to चुनापुर जगतपुर माण्डर, चमकलाल's son चन्द्रदेव, गांगी दिधोय, and रूपसपुर चौधरी शिवानन्द. भवेश produces गणेश, कन्हैया, दिवेश, and मुकेश, with links to विष्णुपुर आहिल हरिअम and कलाधर. Their women's line includes कृष्णा, लता, and रूबी, and the...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 25]

“Raiyam Ghoshiyam Gramaramabh: Manbodh, Mangani Ram, Tilaknath, Chandranath, Nasira-Haveli Pokharia, Harimohan, Krishnamohan, Kanchinath Kiran, and the Sakuri-Belauch Threshold” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढबाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकें पिता-पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

**अध्याय २६ — Sakuri Belauch Gramaramabh: Shivdas,
Tivyakara, Keuntu, Purai, Gunakar, Ramkrishna,
Devanand, Ratnapati-Jhingur, Gauridatt, Buddhinath,
Rajkumar, Vasukinath, and the Bhanupunur-Panichobh
Thr**

‘अथ सकुरी बेलउंच ग्रामारम्भः’क उद्घाटन स्वयं स्रोतक अभिलेखीय सीमा अछि। शिवदास, केउन्तु आ रत्नपति-झिंगुरक नाम पढ़बामे प्रत्येक सन्तान/सम्बन्धपदक साक्ष्य आवश्यक अछि। नामक लम्बा संयोजन तकर विवाह वा गुरुपरम्परा स्वतः निर्धारित नहि करैत।

संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“The new heading “अथ सकुरी बेलउंच ग्रामारम्भः” introduces a fresh village register.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 26]

“Gunakar’s branch is enlarged through Bhupa, Duve, Hirdu, Padum, and Viduk.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 26]

“Sakuri Belauch Gramaramabh: Shivdas, Tivyakara,
Keuntu, Purai, Gunakar, Ramkrishna, Devanand,
Ratnapati-Jhingur, Gauridatt, Buddhinath, Rajkumar,
Vasukinath, and the Bhanupunur-Panichobh Thr” शीर्षक
भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम,
स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि
अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ
विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ
व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि।
मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा
एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्याय २७ — Bhanupunur Pu Panichobh Gramaramabh:
Ramdev, Thitho, Jiveshwar, Bhanukar, Chandrakar,
Jivdhar, Shrinath, Hingu, Durgadatt, Narayandatt,
Gangadhar, Anantram, Bhavdev, Ranjan, and the Ruchouli
'अथ भानुपुनुर पु पनिकोभ ग्रामारम्भः'क पाठ ग्राम आ मूलवर्गक संयुक्त
विधान अछि। रामदेव, ठिठो आ गङ्गेश सन नामक उपस्थिति ऐतिहासिक
प्रसिद्धि कारणेँ तुरन्त अभिन्नता-घोषणा माँगैत नहि; पिता आ अभिलेखक
पास-पड़ोस मुख्य कसौटी अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत
अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम
आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या
अधिक विश्वसनीय होयत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि
नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती
शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि
देबाक चाही।

“Bhanukar produces Ratnakar, linked with Bela-Sakaradhi and Hore.” [मूल
ग्रन्थ, अध्याय 27]

“Chandrakar produces Pithu and Jivdhar, linked with Tapanpur and Vidu.”
[मूल ग्रन्थ, अध्याय 27]

“Bhanupunur Pu Panichobh Gramaramabh: Ramdev, Thitho, Jiveshwar, Bhanukar, Chandrakar, Jivdhar, Shrinath, Hingu, Durgadatt, Narayandatt, Gangadhar, Anantram, Bhavdev, Ranjan, and the Ruchouli” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्याय २८ — Ruchouli Ekharā Gramaramabh: Jyotirvid Harishwar, Gunishwar, Hridayeshwar, Baburaiya, Vyakaran Ramchandra, Shrotiya Gangesh, Rajendra, Dharbharan, Vishwambhar, Judge Rameshwar, and the Sulh

‘अथ रूचौलि एकहरा ग्रामारम्भः’क विवरणमे ज्योतिर्विद हरिश्वर आ व्याकरण-सम्बन्धी उपाधिक उल्लेख बौद्धिक इतिहास लेल उपयोगी अछि। मुदा शास्त्रीय उपाधि आ प्रकाशित कृतिसूचीक सीधा साम्य मात्र अनुमान होयत; स्वतंत्र पाठ-स्रोत जाँचल जाए।

एहि शाखाक नाम-धनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“Jyotirvid Gunishwar gives Hridayeshwar, described as famous Baburaiya, and connects with Mahamahopadhyay Vrindavan Chandra, Pandua, Pandit Dhireshwar, Pali, and Jyotirvid Sonmani.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 28]

“The source then gives “मिश्र म०म० हृदयेश्वर प्र० बुबुरैया,” linking this figure with Vyakaran Ramchandra, Gangesh, and Jayakant.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 28]

“Ruchouli Ekharā Gramaramabh: Jyotirvid Harishwar, Gunishwar, Hridayeshwar, Baburaiya, Vyakaran Ramchandra, Shrotriya Gangesh, Rajendra, Dharbharan, Vishwambhar, Judge Rameshwar, and the Sulh” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकें पिता-पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्याय २९ — Sulhani Naraun Gramaramabh: Mahidhar, Udayakar, Ratnakar, Dalu, Madhukar, Lakshman, Ramkrishna, Dharmeshwar, Tulakrishna, Khokha Devanath Jha, Jagmohan, Harimohan, and Ufarail Khokha
सुल्हनी-नरउन ग्रामारम्भमे महिधर, उदयकर आ रत्नाकरक क्रम सामाजिक स्मृतिक बहुपीढीय संरचना खोलैत अछि। पञ्जीक नाम-शृंखला सचेत शास्त्रीय पठन चाहैत अछि; एकहि प्रचलित नामक दोहराव इतिहासक व्यक्ति-समानीकरणक पर्याप्त आधार नहि।

संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना 'वहाँ गेल' आ 'वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित' दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“The internal heading “हवेली देशेखोखा देवनाथ झा” shifts the focus to Chandrapati’s line, giving Manorath, Devanath, and Kanhaiya.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 29]

“Sulhani-Naraun opening: Mahidhar, Manodhar, Lakshmidhar, Shridhar, Udayakar, Priyankar, Ratnakar, Pushpkar, Ruchikar, Dalu, Madhukar, Chandrakar, and Divakar.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 29]

“Sulhani Naraun Gramaramabh: Mahidhar, Udayakar, Ratnakar, Dalu, Madhukar, Lakshman, Ramkrishna, Dharmeshwar, Tulakrishna, Khokha Devanath Jha, Jagmohan, Harimohan, and Ufarail Khokha” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्याय ३० — Tripurau Pu Li Naraun Gramaramabh: Dakra-Dihiya, Vishweshwar, Gaurishwar, Mahamahopadhyay Harishwar, Saraswati Ram, Dharadhar, Gangadhar, Raghudev, Ruchidev, Lakshmipati, Rudrapati, and the

त्रिपुरौली-नरउन ग्रामारम्भ पहिनुक सुल्हनी खण्डक बाद नूतन आरम्भ चिन्हित करैत अछि। डकरा-दिहिया आ विश्वेश्वरक सम्पर्कक व्याख्याले मात्र स्थलसूचक शब्दक लम्बा जाल नहि, पितृनाम, शाखा, गुरु आ विवाहक अवयव देखब चाही।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

“The opening descent proceeds from Dalu’s son Madhukar to Vishweshwar, whose sons are Gaurishwar and Graheshwar.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 30]

“The note further says that before this displacement the family had lived for roughly three hundred years in the Dihiya area and had earned fame throughout eastern Mithila through learning and intellectual distinction.”

[मूल ग्रन्थ, अध्याय 30]

“Tripurau Pu Li Naraun Gramaramabh: Dakra-Dihiya, Vishweshwar, Gaurishwar, Mahamahopadhyay Harishwar, Saraswati Ram, Dharadhar, Gangadhar, Raghudev, Ruchidev, Lakshmipati, Rudrapati, and the ” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्याय ३१ — Nagwad Ghosot Gramaramabh: Vasudev, Divakar, Buddhikar, Govind, Lakshminath, Vidyapati, Damodar, Ramnath, Agamacharya Devanath, Gopinath, Madhusudan, Janardan, Haridas, Shubhankar, Fakir, Is
अध्याय ३१-४० : घुसौतसँ एकहरा धरि पदवी, ग्रामारम्भ आ अन्तिम तुलनात्मक पञ्जी

नगवाड-घुसौत, असि-एकहरा, गंगौरा-बुधवाल, बढियाम-पबौली आ देवहर-देवहरक खण्ड अन्तिम प्रसंगमे खोलल गेल अछि। एहिमे विद्यापति सन प्रसिद्ध-समान नाम, व्याकरणसम्बद्ध उपाधि आ प्रशासनिक पदक उल्लेख नाम-पेशा-स्थानक बहुधा सम्बन्ध बतबैत अछि। मुदा प्रसिद्ध नामक उपस्थितिसँ ओकर प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तिसँग निश्चित अभिन्नता घोषित नहि होइत। एतय पितृनाम, मूलग्राम आ लेखकीय ग्रन्थक अलग साक्ष्य चाही।

अन्तिम अध्याय ४०क तुलनात्मक सारिणी वंशावली-पठनक साधन अछि, प्रत्यक्ष प्राचीन पञ्जीक विकल्प नहि। मूल क्रमक भिन्न शाखासभक तुलनासँ सामाजिक जालक उपयोगी नक्शा बनैत अछि; तथापि समान प्रविष्टिक बहुविकल्पी पाठ अलग चिह्नित होय। विशेष रूपसँ स्त्रीनाम आ मातृक सूत्र निस्सन्देह ऐतिहासिक अछि, मुदा ओहि संकेतक अभिलेखीय अर्थ पाठक पूर्वाग्रहसँ मुक्त होयब कठिन अनुशासन अछि।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकेँ विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना 'वहाँ गेल' आ 'वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित' दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“The Sadupadhyay - Ganesh branch continues through Baneshwar ,
Virnarayan , Ramakant , Madhukar , and Krishnamani.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय
31]

“Opening line: Vasudev, Divakar, Vibhakar, Prajnakar, Harikar, Trilochan,
None, Khedu, Pritikar, Ruchikar, Buddhikar, Rudra, and Ravikar.” [मूल ग्रन्थ,
अध्याय 31]

“Nagwad Ghosot Gramaramabh: Vasudev, Divakar,
Buddhikar, Govind, Lakshminath, Vidyapati, Damodar,
Ramnath, Agamacharya Devanath, Gopinath, Madhusudan,
Janardan, Haridas, Shubhankar, Fakir, Is” शीर्षकक भीतर
लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम,
स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि
अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ
विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ
व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित
अछि। एहि सम्बन्धकें पिता-पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक
पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ
अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्याय ३२ — Asi Ekbara Gramaramabh: Nasira-Deshe Pada, Vishwanath, Nandan, Bhanjan, Bhairam, Kanhuram, Shambhunath, Kuli, Bhaynath, Pratapanath, Kalikant, Shivanand, Pokharia, and Nasira-Deshe Bhadari

संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना ‘वहाँ गेल’ आ ‘वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित’ दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“Bhaynath’s son Pratapanath is linked with Kothua, Gorachan, Mishra Rupnath, Sodarpur, and Mishra Bhairav.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 32]

“Opening line: Chandrapati Hedu, Vishwanath, Nandan, Bhanjan, and Bhikhari under the Nasira-Deshe Pada setting.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 32]

“Asi Ekbara Gramaramabh: Nasira-Deshe Pada, Vishwanath, Nandan, Bhanjan, Bhairam, Kanhuram, Shambhunath, Kuli, Bhaynath, Pratapanath, Kalikant, Shivanand, Pokharia, and Nasira-Deshe Bhadari” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकें पिता-पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्याय ३३ — Gangora Budhwal Gramaramabh: Gondwara-Phulbadiya, Haveli-Radheli, Lotan, Rudra, Rangai, Rameshwar, Shivdatt, Pitambar, Dharanath, Khushi, Domai, Bhola, Rajendra, and the Aamdanda Close

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

“Dharanath’s son Khushi becomes the next operative node.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 33]

“Khushi line: Khushi, Domai, Gangadhar, the Sarisav-Sodarpur and Ratauli-Darhiara links, and the daughter-line through Rajanpura-Darhiara and Jhauwa-Panichobh.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 33]

“Gangora Budhwal Gramaramabh: Gondwara-Phulbadiya, Haveli-Radheli, Lotan, Rudra, Rangai, Rameshwar, Shivdatt, Pitambar, Dharanath, Khushi, Domai, Bhola, Rajendra, and the Aamdanda Close” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकें पिता-पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्याय ३४ — Badhiyam Pawauli Gramaramabh: Nasira-Haveli Sauria, Ravidatt, Bhagirath, Jagannath, Janardan, Vishwanath, Ram, Ramchandra, Ratinath, Kamal, Narayan, Manorath, Rajaram, and the Devhar Thresho

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना 'वहाँ गेल' आ 'वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित' दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“The next son of Vishwanath is Ratinath. Ratinath is placed through Pandoli-Darhiara with Pitambar’s son Madhusudan. Ratinath’s son Kamal then becomes the central node of the next passage, with Sudaay-Belauch, Gaurinath, Vishwanath, and Baheradhi-Harakhu as linked names and places. Kamal’s line records Govind, Pitambar, and Moti...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 34]

“Opening descent : Ravidatt , Bhagirath , Jagannath , Janardan , Vishwanath , Ram , and Ramchandra under the Badhiyam - Pawauli / Nasira - Haveli - Sauria frame.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 34]

“Badhiyam Pawauli Gramaramabh: Nasira-Haveli Sauria, Ravidatt, Bhagirath, Jagannath, Janardan, Vishwanath, Ram, Ramchandra, Ratinath, Kamal, Narayan, Manorath, Rajaram, and the Devhar Thresho” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि। मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्याय ३५ — Devhar Devhar Mul-Mu Gramaramabh:

Jaykar, Sagar, Matikar, Lakshmikar, Gunakar, Kameshwar, Rajoo, Haldhar, Narsingh, Brahmeshwar, Umapati,

Narayan, Haradatt, Krishnadev, Nehal, Sitaram, Virna

संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ

पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना 'वहाँ गेल' आ 'वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित' दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“Virnarayan’s sons are Ramdular, Haridayal, Ganesh, and Dhanpati.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 35]

“Opening descent: Jaykar, Sagar, Matikar, Lakshmikar, Gunakar, Vatseshwar, Javeshwar, Kameshwar, Rajoo, and Haldhar.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 35]

“Devhar Devhar Mul-Mu Gramaramabh: Jaykar, Sagar, Matikar, Lakshmikar, Gunakar, Kameshwar, Rajoo,

Haldhar, Narsingh, Brahmeshwar, Umapati, Narayan,

Haradatt, Krishnadev, Nehal, Sitaram, Virna” शीर्षकक भीतर

लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम,

स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि

अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ

विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ

व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकें पिता-पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्याय ३६ — Shandilya-Gotre Brahmpura Pu Sako(b)ra-Kobara, Masuria-Alay: Delhan, Kanh, Ram, Vishweshwar, Shrinath, Dharmnath, Vidyadhar, Yashodhar, Chintamani, Narhari, Dharmeshwar, Jaydev, Rupnarayan,

एहि अध्यायक विवेचनक सन्दर्भ ओकर मूल पाठक्रम अछि। पञ्जीमे व्यक्ति, ग्राम, शाखा, वैवाहिक सम्बन्ध आ उपाधि जतेक स्तरपर भेटैत अछि, ओ सभकैँ बिना अतिरिक्त अनुमान अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

एकटा मूल पञ्जी-पाँतिसँ निकसल व्याख्याक सत्यापन लेल एहन प्रतिलोम-सूचक चाही जाहिसँ शोधकर्ता विश्लेषणसँ मूल प्रविष्टि धरि फेर पहुँचथि। बिना एहन अनुक्रमक निष्कर्ष प्रभावशाली भएओ अस्थिर रहि सकैत अछि।

“The source opens this chapter not with the usual “अथ” formula , but with a strong gotra - and - village declaration : “शाण्डिल्य गोत्रे ब्रह्मपुरा पु सँकोबरा (कोहबरा) मसुरिसु या.” This places the register in the Shandilya gotra and associates it with Brahmpura , Kobara...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 36]

“The closing part of the chapter adds Vedamani, also called Phullu, whose son is Dinanath, linked with Katai through Shankardatt.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 36]

“Shandilya-Gotre Brahmpura Pu Sako(b)ra-Kobara,
Masuria-Alay: Delhan, Kanh, Ram, Vishweshwar, Shrinath,
Dharmnath, Vidyadhar, Yashodhar, Chintamani, Narhari,
Dharmeshwar, Jaydev, Rupnarayan, ” शीर्षकक भीतर लेखक जे
सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ
व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक
चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक
अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-
इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।
स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि।
मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा
एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

अध्याय ३७ — Kanhouli Parwaha: Ruchikar, Anandkar, Mitrakar, Jasai, Rajiv, Hariram, Vyakaran Halayudh, Baburam, Nityanand, Kalanand, Shardanand, Ramanand, Kripanand, Vibhuti, and the Ekharas-Sangram Thres

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि। पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही।

संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना 'वहाँ गेल' आ 'वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित' दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

“Within the Sadupadhyaya Mitrakar continuation, Kusha gives Ravi, Vishnu, Jane, Paran, and Jasai.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 37]

“The closing passage includes Baburam’s son Lochan, Lochan’s son Chhotkani, and Chhotkani’s sons Sadanand and Panchanand or Kunkun.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 37]

“Kanhouli Parwaha: Ruchikar, Anandkar, Mitrakar, Jasai, Rajiv, Hariram, Vyakaran Halayudh, Baburam, Nityanand, Kalanand, Shardanand, Ramanand, Kripanand, Vibhuti, and the Ekharas-Sangram Thres” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकें पिता-पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्याय ३८ — Ekbara Sangram Gramaramabh: Dom Tekari, Chaturvedadhyarya Kamdev, Yajnik Parashuram, Shridhar, Balbhadra, Shrirang, Santosh, Ratneshwar, Ruchikar, Harinath, Gangeshwar, Theghanand, Ramanand,

संयुक्त ग्राम-रेखाकें विवेचनमे रूपान्तरित करैत मूल क्रम हटाओलासँ पञ्जीकार द्वारा संरक्षित सामाजिक जानकारी बदलि सकैत अछि। तहिना 'वहाँ गेल' आ 'वहाँक सम्बन्धमे उल्लिखित' दुनूक अन्तर राखि पुनर्निर्माण करब आवश्यक अछि।

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि। ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत।

“The source pauses to identify “धर्मपुर पु देशे बहोरा नेना झा.” Nena’s wife Vilashvati is named, along with the daughters Jambavati, Kantavati, and Dukhani.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 38]

“Panchanand gives Dilip, Santosh, and Ashutosh. Dilip’s son Dhiraj is marked as an income-tax inspector. Santosh gives Pranav, and the line names Meenakshi, B.A. Ashok, Himanshu, and links to Ramai, Ratauli-Harihara, and Pokharia-Raiyam-Ghoshiyam. Sheshnarayan gives Ravinarayan and Deepak, while Mahinarayan is explicitly described as a respected...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 38]

“Ekhara Sangram Gramaramabh: Dom Tekari,
Chaturvedadhyarya Kamdev, Yajnik Parashuram,
Shridhar, Balbhadra, Shrirang, Santosh, Ratneshwar,
Ruchikar, Harinath, Gangeshwar, Theghanand,
Ramanand,” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि,
ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-
अलग पदबाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत
आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक
अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल
गेल अछि।

स्थानसूचक पदक बारम्बार उपस्थितिसँ ग्राम-सम्बन्धक जाल बनैत अछि।
मुदा ग्राम-पङ्क्तिसँ प्रवासक निश्चित तिथि, निवासक कालावधि अथवा
एकहि व्यक्तिक दू ठाम उपस्थिति सुनिश्चित करब योग्य नहि।

**अध्याय ३९ — Ekhara Sangram Sirsia Gramaramabh:
Bhorilal Jha, Choa Lal, Sona Lal, Achmit Lal, Ajwalal,
Bhupal Lal, Achkalal, Banmali, Shivanand, Bhavani Kant,
Madhurapati, Lalbihari, Mahopadhyaya Shrinat**

ग्रामनामक युगल वा त्रिकर उपस्थिति स्रोतमे सम्बन्धक मार्ग चिन्हित करैत अछि; प्रत्यक्ष यात्राक तिथि नहि । ग्रामशीर्षक, शरीर-पाठमे आबयवला ग्राम आ वंशगत मूलग्राम अलग पहिचानल जाए तँ सामाजिक भूगोलक व्याख्या अधिक विश्वसनीय होयत ।

एहि शाखाक नाम-घनत्वक कारण एकहि व्यक्तिक अनेक उल्लेख आ एकहि नामक अनेक व्यक्ति-दुनू सम्भावना खुलल रहैत अछि । पितृनाम, पूर्ववर्ती शाखा, मूलग्राम आ मूल अभिलेखक क्रमांक बिना अभिन्नता-निर्णय नहि देबाक चाही ।

“The final section opens with “एकहरा संग्राम सिरसिया ग्रामारम्भः.” It identifies Bhorilal Jha in the Shri Pur Desh-Majlishpur frame and connects him back to the earlier Ekharas-Sangram sequence through Nehal alias Vishweshwar, Nena, and Bhorilal.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 39]

“Hulash gives Parashnath alias Parshi and Yadunath. Parashnath’s sons are Bhagirath and Jaydev, while Jaydev gives Rameshwar, Kameshwar, and Brajeshwar. The closing lines carry the descent through Kusheshwar, Mukhiya Suresh, Dharmacharya Mahopadhyaya Chandeshwar, and Jaydev’s son Rameshwar, whose line reaches Amarnath and his daughter linked with...” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 39]

“Ekhara Sangram Sirsia Gramaramabh: Bhorilal Jha, Choa Lal, Sona Lal, Achmit Lal, Ajwalal, Bhupal Lal, Achkalal, Banmali, Shivanand, Bhavani Kant, Madhurapati, Lalbihari, Mahopadhyaya Shrinat” शीर्षक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पढ़बाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

एहि अध्यायक साक्ष्यमे विवाह अथवा मातृक सम्बन्धक पद उपस्थित अछि। एहि सम्बन्धकें पिता-पुत्रक सीधा रेखामे मिला देबासँ पञ्जीक पार्श्ववर्ती सामाजिक जाल हेराएत। ससुराल, जन्मग्राम, मूलग्राम आ अभिलेखीय विवाह-सम्पर्क अलग राखल जाए।

अध्याय ४० — Cross-Analysis, Reference Apparatus, and Consolidated Reading Tables

नाम वा सूचकांकक मानकीकरणमे मूल लिपि आ सम्पादित लिप्यन्तरण अलग-अलग स्तम्भमे रखनाइ उपयुक्त अछि। एकहि संकेत अनेक पाठमे दोसर अर्थ लेने हो तँ टिप्पणीमे ओकर विकल्प स्पष्ट कएल जाए।

एहि प्रकारक उपकरणक सही मूल्य एकर पुनर्परीक्षण-सम्भावनामे अछि, नहि कि हर अनिश्चित प्रविष्टिक कृत्रिम समाधानमे। अस्पष्ट अंक, रिक्त स्थान आ दूहरायल नाम स्रोत-सूचनाक भागक रूपमे बचल रहय।

“The older register privileges titles such as महामहोपाध्याय, महोपाध्याय, सदुपाध्याय, वैयाकरण, ज्योतिर्विद, आचार्य, पंडित, चौधरी, ठाकुर, मिश्र, झा, पाठक, and ओझा.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 40]

“This index gathers principal persons, aliases, scholarly titles, and branch names that are prominent in chapter headings and branch summaries.” [मूल ग्रन्थ, अध्याय 40]

“Cross-Analysis, Reference Apparatus, and Consolidated Reading Tables” शीर्षकक भीतर लेखक जे सामग्री संगठित करैत छथि, ओहिमे अभिलेखक मूल क्रम, स्थाननाम आ व्यक्ति-सम्बन्धक स्तर अलग-अलग पदबाक अछि। एहि अध्यायक चयनित पाठ-साक्ष्यक परीक्षण करैत आलोचना स्रोतसूत्र आ विवेचनक अन्तरपर केन्द्रित अछि; मात्र शीर्षक अथवा परवर्ती सूचीसँ व्यक्ति-इतिहासक निश्चित विधान नहि बनाओल गेल अछि।

सामाजिक श्रेणी अथवा पदवी एकटा अभिलेखीय सूचना अछि, व्यक्ति विषयक सम्पूर्ण सामाजिक सत्य नहि। ऐतिहासिक वर्गीकरणक शब्दानुसरण आ वर्तमान समयक मानवीय सम्मान दुनूक रक्षा करबाक हेतु सीमित स्रोत-निष्कर्ष आवश्यक अछि।

समग्र मूल्याङ्कन

पाँचम मूल पुस्तक राजकीय उपाधि, वंशज, पुवरी-पछवारी सम्बन्ध, बदलैत पेशा आ ग्रामक गहन ऐतिहासिक जाल प्रस्तुत करैत अछि। वर्तमान कालक भौगोलिक सीमा पुरान मूल-वर्गक विकल्प नहि। सन्देहास्पद समाननामक संयोगकें वंशीय समानता मानबाक पूर्व प्रत्येक शाखा-सूत्र पढल जाए।

अन्तिम तुलनात्मक अनुक्रम आ पाठक सहायक-सारिणी साहित्येतिहासक ओर विस्तारित होइत अछि; ताहिमे विद्वत्-उपाधि सँ स्वतः कृतित्व सिद्ध नहि। नाम, पदवी, ग्राम, समय आ कृतिक स्वतंत्र पाठसाक्ष्य पाँच अलग प्रमाणसूत्र रहत।

स्रोत-विवेकक मर्यादा

समीक्षा मूल ग्रन्थक अध्यायानुक्रम, शब्दप्रयोग आ व्याख्यासँ सम्बन्धित अछि। प्राथमिक पञ्जीक स्वतन्त्र मूल-पृष्ठ, दिनाङ्कयुक्त प्रमाण, संस्कृत/तिरहुता समांतर संस्करण, आनुवंशिक प्रयोगशालाक आँकड़ा आ अभिलेखित व्यक्तिसभक आजुक वंशजक विषयमे स्वतंत्र प्रमाणन एतय नहि कएल गेल अछि।

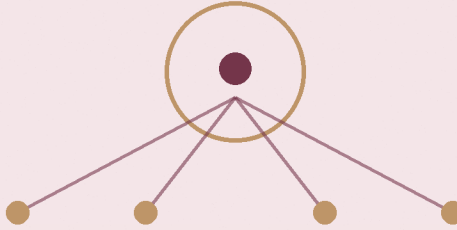
ग्रन्थसूची

ठाकुर, गजेन्द्र। Decoding the Panji of Mithila, Volume V।

उपलब्ध मूल ग्रन्थ-पाठ।

वंशावली मानचित्रण

वंशावलीक सामाजिक भूगोल, ग्रामक सम्बन्ध,
विद्वत्-उपाधि आ विवाह-जालक आलोचनात्मक
अध्ययन। परम्परागत अभिलेख आ आधुनिक
इतिहास-व्याख्याक प्रमाणगत अन्तरक परीक्षण।



विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X



www.videha.co.in



Videha GitHub